क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1.श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 32 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।

2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलने से बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।

3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पं. रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पं. शान्तिकुमारजी पाटील, पं. संजीवजी गोधा, पं. पीयूषजी शास्त्री, पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं प्रवीणजी शास्त्री आदि विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।

4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ-साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।

5.जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।

6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगटती है।

7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट लिस्ट में स्थान प्राप्त करते हैं।

9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।

10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अवसर प्राप्त होते हैं।

11. छात्रों की वक्तृत्व शैली, तर्क शैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ ... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **13 से 29 मई,09 तक कोलारस (म.प्र.)** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें। **ह्न पीयूष शास्त्री एवं धर्मेन्द्र शास्त्री**

फॉर्म हेतु पता : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय,
ए-4, बापूनगर, जयपुर-15, फोन-0141-2705581, 2707458

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 27 309 अंक : 9

आवै न भोगन में....

आवै न भोगन में तोहि गिलान।।टेक।।

तीरथनाथ भोग तजि दीने, तिनतैं मन भय आन।
तू तिनतैं हू डरपत नाहीं, दीसत अति बलवान।।
आवै न भोगन में तोहि गिलान।।1।।

इन्द्रिय तृप्ति काज तू भौगे, विषय महा अघखान।
सो जैसे घृतधारा डारै, पावक ज्वाल बुझान।।
आवै न भोगन में तोहि गिलान।।2।।

जे सुख तौ तीछन दु:खदाई, ज्यों मधुलिप्त कृपान।
तातैं भागचंद इनको तजि आत्मस्वरूप पिछान।।
आवै न भोगन में तोहि गिलान।।3।।

ह्न कविवर पण्डित भागचंदजी

* * *

नियमसार प्रवचन

काल द्रव्य का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 31 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

समयावलिभेदेण दु दुवियप्पं अहव होइ तिवियप्पं।
तीदो संखेज्जावलिहदसंठाणमप्पाणं ।।३१।।

(हरिगीत)

समय आवलि भेद दो भूतादि तीन विकल्प हैं।
संस्थान से संख्यातगुण आवलि अतीत बखानिये।।३१।।

समय और आवलि के भेद से व्यवहारकाल के दो भेद हैं अथवा (भूत, वर्तमान और भविष्य के भेद से) तीन भेद हैं। अतीत काल (अतीत) संस्थानों के और संख्यात आवलि के गुणाकार जितना है।

एक आकाश प्रदेश में स्थित परमाणु जितने काल में अन्य प्रदेश को मंदगति से प्राप्त होता है; वह काल समय है। एक परमाणु अन्य परमाणु को लाँघता है, ऐसा अर्थ है। परमाणु लाँघता है, इसका तात्पर्य भी दूसरे परमाणु के ऊपर से जाता है - ऐसा नहीं; अपितु आकाश के एक प्रदेश को छोड़कर अन्य दूसरे प्रदेश तक मंदगति से गमन करता है, उतने काल को समय कहते हैं। यह कालद्रव्य की पर्याय है। जिसप्रकार एक परमाणु की पर्याय छद्मस्थ के ज्ञान में नहीं आती; उसीप्रकार अन्य जीवादि की एक समय की पर्याय भी प्रत्यक्ष जानने में नहीं आती। काल का छोटे से छोटा अंश समय पर्याय है। जितने में काल की पर्याय है, उतने में पर्यायवान काल द्रव्य है। इसप्रकार कालद्रव्य की सिद्धि होती है।

छोटे से छोटे अंश में पर्याय का माप आ जाता है। एक पर्याय जितने क्षेत्र में है, उतने क्षेत्र में एक द्रव्य है। पर्याय जितनी सुन्दर है, द्रव्य भी उतना ही सुन्दर है। परमाणु परमाणु को लाँघता है अथवा एक परमाणु एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक जाता है - यह बात एक ही है।

एक प्रदेश में जो काल का माप आता है, वह व्यवहारकाल है। जैसे व्यवहारकाल है, वैसे ही निश्चयकाल है। जिसप्रकार पेन्सिल की ललास पर्याय का स्वरूप पेन्सिल जितना है; उसीप्रकार आत्मा के साता-असाता में सुख-दुःखरूप कल्पना पर्याय का क्षेत्र भी सम्पूर्ण आत्मा जितना है। व्यवहाररत्नत्रय के परिणाम पर्याय है। यह पर्याय जितनी है, उतना द्रव्य भी है। काल के अतिरिक्त पाँच द्रव्यों की एक समय की पर्याय पकड़ में नहीं आती, जबकि काल की पर्याय का माप एक समय में पकड़ने में आता है। पर्याय को स्वीकार करते ही पर्यायवान कालद्रव्य भी पकड़ में आता है। परमाणु ने मंदगति की अर्थात् काल का माप निमित्तरूप कहा और वहाँ काल की पर्याय उपादान है, उसका माप भी आ गया। पर्याय और पर्यायवान दोनों सिद्ध हो गये। कितने ही लोग कालद्रव्य को औपचारिक कालद्रव्य कहते हैं तथा कोई जीव कालद्रव्य को अनंत कहते हैं-यह दोनों ही बातें उक्त कथन से झूठी साबित होती है।

एक परमाणु अन्य परमाणु के प्रदेश तक मंदगति से जाता है, वहाँ कालद्रव्य ज्ञान में आ जाता है। ऐसा निश्चित करनेवाले ज्ञान के उपादानरूप आत्मा का पुरुषार्थ करूँ तो उसमें काल निमित्त है - यह भी निश्चित होता है।

सब मिलकर एक हुए - ऐसा नहीं है और कालद्रव्य नहीं है - ऐसा भी नहीं है। आत्मा में राग-द्वेषादि की पर्याय होती है, वह क्षणिक और एकसमय की होने पर भी आत्मारूप है। संसार एक समय का है, किन्तु उसका क्षेत्र तो सम्पूर्ण आत्मा है। आकुलता के कारण आत्मा निश्चित नहीं होता, किन्तु ज्ञान की पर्याय ज्ञान में झुककर निर्णय करें तो आत्मा का निर्णय होता है।

कालद्रव्य की इसे खबर नहीं है, किन्तु उसे जाननेवाला तो आत्मा ही है। पर्यायवान के कारण पर्याय है। अभेद के कारण भेद हैं। ज्ञानी ऐसा निश्चित करता है कि अहो! काल नाम का पदार्थ है, उसे मैं ज्ञान से जानता हूँ। एक प्रदेशी काल का माप पूर्ण होने पर भी यदि कोई काल को दो प्रदेशी कहे तो उसकी बात झूठी है; क्योंकि जितने प्रमाण में पर्याय है, उतने प्रमाण में पर्यायवान द्रव्य है। मेरी ज्ञान पर्याय मेरे आत्मा के क्षेत्र प्रमाण हैं। वह ज्ञान की पर्याय आत्मा के त्रिकाली सामान्य स्वभाव की ओर झुके तो उसे खबर हो, यह सच्चा पुरुषार्थ है, बाहर की बात नहीं। बाह्य वस्तु तो आत्मा में कुछ कर ही नहीं सकती। (शेष पृष्ठ 29 पर ...)

छहढाला प्रवचन

अजीव और आस्रव के बारे में भूल

तन उपजत अपनी उपज जान, तन नशत आपको नाश मान।
रागादि प्रगट ये दुःखदैन, तिनही को सेवत गिनत चैन।।५।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

कोई बड़ा बादशाह तीव्र पाप करके मर जाय, उसका शरीर तो अभी यहाँ मुलायम बिछाने में पड़ा हो और आत्मा नरक में पहुँच जाय; वहाँ अपने किये हुए पापों की घोर वेदना का वेदन करता हो। यह शरीर उसका कहाँ था? यदि शरीर उसका हो, तब तो नरक में पड़ा हुआ वह जीव सुखी होना चाहिए; क्योंकि शरीर तो मखमल के मुलायम गद्दे में पड़ा है। अरे, यहाँ शरीर भले मखमल में पड़ा हो; परन्तु वह आत्मा तो नरक में घोर दुःखों का वेदन कर रहा है।

कोई सम्यग्दृष्टि-धर्मात्मा चक्रवर्ती भी हो, सोलह हजार देव उनकी सेवा करते हों, तो भी वे जानते हैं कि चक्रवर्तीपने की यह रिद्धि हमारी नहीं है, इस रिद्धि में कहीं हम नहीं हैं, हम तो हमारी अनन्त गुणसम्पन्न चैतन्य रिद्धि में हैं, वही रिद्धि हमारी है।

यह बाहरी आँख-कान आदि अवयव आत्मा नहीं है, आत्मा के तो अपने ज्ञान-दर्शन-आनन्द-अनादि अनंत अवयव हैं, जो कि आत्मा से कभी अलग नहीं होते। ऐसे निजस्वरूप को जाने बिना अज्ञानी अपने को देहरूप ही समझ रहा है; उसके स्वप्न में भी 'शरीर ही मैं हूँ' - ऐसा रटन चलता है; चेतन भगवान अपने को जड़ अचेतन मानकर सारी दिशा ही भूल गया है। अरे ! यह कैसा भ्रम है कि स्वयं अपने आपको ही खो दिया ! वह पर को अपना मानकर बन्दर की तरह दुःखी हो रहा है।

एक बन्दर था; वह जिस वृक्ष पर बैठा, उस वृक्ष को उसने अपना मान लिया; जब पवन की झकोर और उस वृक्ष के सूखे पत्ते गिरने लगे; तब वह बन्दर दुःखी होने लगा कि अरे ! मेरे ये पत्ते खिरे जाते हैं। - कैसा भ्रम? वैसे ही मोही जीव अज्ञान से देहादिक संयोगों को अपना मानते हैं और संयोग दूर होने पर दुःखी होते हैं कि 'अरे, ये सब कहाँ चले जा रहे हैं; परन्तु हे भाई ! ये तुम्हारे थे ही कब? तुम व्यर्थ ही उनको अपना मानकर दुःखी हो रहे हो; अतः इस मिथ्या मान्यता को छोड़ो ! और भिन्न आत्मा को पहिचानो, तभी तुम्हारा दुःख मिटेगा।

अज्ञान से जीव अपने को देहरूप मानता है, रागादिभाव प्रगट दुःखदायक होने पर भी अज्ञान से जीव उन्हें सुखरूप मानकर उनका सेवन कर रहा है; आस्रव जीव के चेतनस्वभाव से भिन्न होने पर भी उनको वह अपना स्वरूप मानकर उसका सेवन कर रहा है।

जो शुभराग से धर्म का कुछ लाभ अथवा मोक्ष होना मानता है, उसने आस्रवतत्त्व को आस्रवरूप न जानकर संवरनिर्जरारूप माना; उसने आस्रव दुःखरूप होने पर भी उन्हें हितरूप माना; अधर्मरूप होने पर भी उसको धर्म का साधन माना; बंध भाव होने पर भी उसको मोक्ष का साधन माना; विपदा होने पर भी उसे आत्म संपदा प्राप्त करने वाला माना - इसप्रकार अज्ञानी के सभी तत्त्वों में भूल है। जो दुःख देनेवाले भावों को सुख देनेवाला मानकर उनका सेवन करे, वह दुःख से कैसे छूटेगा? अशुभराग एवं शुभराग दोनों में दुःख हैं।

प्रश्न : शुभ से स्वर्ग तो मिलता है?

उत्तर : अरे भाई ! स्वर्ग मिला उससे आत्मा को क्या मिला? उस स्वर्ग की सामग्री में जिसको सुख की कल्पना होती है और उस विषय-सामग्री से रहित अतीन्द्रिय आत्मसुख जिसके लक्ष्य में नहीं आता, वह मिथ्यादृष्टि है।

श्री कुन्दकुन्दस्वामी प्रवचनसार में कहते हैं कि पुण्यजनित तृष्णाओं के द्वारा अत्यन्त दुःखी वे जीव मृगतृष्णा के जल की भाँति विषयों में से सुख चाहते हैं; जो कभी नहीं मिल सकता। अतः पुण्यशाली जीव भी पापशाली जीवों की भाँति विषयों को चाहते हुए क्लेश पाते हैं। पुण्य भी पाप की भाँति दुःख का साधन है। शुभ और अशुभ (पुण्य और पाप) दोनों अनात्मभाव हैं, दोनों शुद्धोपयोग से विपरीत हैं - इसप्रकार पुण्य-पाप दोनों में जो समानता नहीं मानते हैं और पुण्य फल में सुख मानकर उसका मोह करते हैं, वे जीव मिथ्यादृष्टिपने से संसार में ही रुलते हुए दुःख का अनुभव करते हैं।[1]

आत्मा शांत-आनन्दस्वरूप है, उससे विरुद्ध पुण्य-पाप के भाव आकुलतारूप हैं। जो शुभराग को चेतनरूप या हितरूप मानकर उनका सेवन करता है, वह वीतरागी-आत्मा का अनादर करता है। अमृतस्वरूप आत्मा के वेदन में परम शांति है, राग के वेदन में थोड़ी भी शांति नहीं है, उसमें तो आकुलता ही है, प्रगटरूप से वह दुःख देनेवाला है; परन्तु अज्ञानी को उसमें मौज (आनन्द) दिखती है; क्योंकि आत्मा की सच्ची शांति उसने कभी नहीं देखी।

लोग रमत-गमत में जो आनन्द मानते हैं, वह तो आकुलता है; जीव को भ्रम से उसमें सुख लगता है। अशुभ में तो दुःख है और शुभ में भी दुःख है, शुभ-अशुभ दोनों से पार चैतन्यभाव

1. प्रवचनसार गाथा 75 से 77 तक

ही सुख है और वही मोक्षमार्ग है। रागादि भाव तो ज्ञान से रहित है, वह ज्ञान से विपरीत है, ज्ञानी को उसमें चैन नहीं, उसमें सुखबुद्धि नहीं; अज्ञानी तो राग में ही चैन मानकर उसमें रुक रहा है; अतः उससे भिन्न अपने स्वरूप को वह कैसे देखे? देह में और राग में ही अपनेपन की बुद्धि से जो प्रतिबद्ध हो गया, वह उनसे भिन्न अपने अन्तर में चैतन्यस्वरूप आत्मा को कैसे ढूँढ़ेगा? कैसे उसका अनुभव करेगा? **'कैसे रूप लखें आपनो?'** - निजरूप तो देह और राग दोनों से पार है; ऐसे निजरूप को देहबुद्धिवाला या रागबुद्धिवाला जीव कहाँ देख सकता है?

जिसप्रकार पाप मोक्ष का कारण नहीं; उसीप्रकार पुण्य भी मोक्ष का कारण नहीं, बन्ध का ही कारण है तो भी अज्ञानी उसको मोक्ष का कारण जानकर बड़े उत्साह से उसका सेवन करते हैं।

भाई! चैतन्य का उत्साह छोड़कर तेरा उत्साह राग में चला गया ! अरे, धन-पुत्र आदि की ममता के पाप में जीव सुख मानता है, उसमें राग करके आनंद मानता है; परन्तु हे जीव ! वह तो आकुलता की ज्वाला है, उसमें तेरी शांति कहाँ है? शांति और आनन्द तो तेरे आत्मा में से ही आता है, आत्मा में ही सुख भरा है; बाहर की अनुकूलता का होना - वह तो सुख नहीं है; बाह्य की ओर झुकनेवाली रागवृत्ति में भी सुख नहीं है। देखो ! यहाँ (छहढाला के इस छन्द में) ऐसा नहीं कहा कि अशुभराग ही अकेला दुःखदायक है; अपितु ('रागादि प्रगट ये दुःखदैन') शुभ या अशुभ सभी रागादिक भावों को दुःख देनेवाला कहा है। पुण्य (शुभ) राग भी दुःखदायक है, तो भी अज्ञानी उस पुण्य के रस के पीछे चैतन्य के सच्चे रस को (अतीन्द्रिय-सुख को) भूल जाते हैं।

सर्वज्ञ भगवान ने सात तत्त्वों के कथन में पुण्य-पाप दोनों को आस्रवतत्त्व में गिनाया है, उनको संवरतत्त्व में नहीं गिनाया। अतः हे जीव ! तुम अपने शुद्ध आत्मा को आस्रवों से भिन्न जानो, तभी तुम्हारी सात तत्त्व संबंधी भूल मिटेगी और तुम सुखी हो सकोगे।

'मैं ज्ञान हूँ' - ऐसे ज्ञान का सेवन-अनुभव सुखरूप है; ज्ञान से विरुद्ध रागादिक भाव का सेवन दुःखरूप है। पाप के फल भोगने में तो जीवों को दुःख लगता है; किन्तु पुण्य के फल भोगने में भी आकुलता और दुःख ही है। पुण्य के फल में भी अनाकुल सुख नहीं है; अनाकुल सुख तो आत्मा के अनुभव में ही है। **'आतम को हित है सुख; सो सुख आकुलता बिन कहिये'** - ऐसा तीसरी ढाल में कहेंगे और उस सुख के उपायरूप सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का कथन करेंगे। वहाँ **'शिवमग लाग्यो चहिये'** ऐसा कहेंगे; अपितु ऐसा नहीं कहेंगे कि पुण्य में सुख है; अतः पुण्य के पीछे लाग्यो चहिये।

देखो तो सही ! यह छहढाला शास्त्र छोटा होने पर भी इसमें कितनी स्पष्ट बात समझाई है ! बहुत अच्छे ढंग से वीतराग-विज्ञान समझाया है । **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : श्री परमात्मप्रकाश ग्रंथ की पंद्रहवीं गाथा में कहा है कि भावकर्म, द्रव्यकर्म और देहादिक सर्व परद्रव्यों को छोड़कर केवलज्ञानमय परमात्मपना प्राप्त किया; अत: यहाँ प्रश्न है कि अरिहन्तदेव ने भावकर्म, द्रव्यकर्म का अभाव किया - यह तो ठीक; परन्तु उनके देहादिक का भी अभाव हो गया - ऐसा कैसे कहा ? शरीर का संयोग तो उनके अभी मौजूद है ?

उत्तर : शरीरादिक तो तीनों काल आत्मा से भिन्न ही हैं; परन्तु पहले उनके प्रति मोह और राग-द्वेष था, उस मोह और राग-द्वेष का अभाव हो गया; इसलिये शरीरादि का भी अभाव हो गया - ऐसा कहने में आया है।

प्रश्न : शास्त्रपठन का तात्पर्य क्या है ?

उत्तर : शास्त्रों का तात्पर्य तो भिन्नवस्तुभूत ज्ञानमय आत्मा बतलाना है। ऐसे आत्मा का ज्ञान होना ही शास्त्र पढ़ने का तात्पर्य है। जो जीव ऐसे आत्मा को नहीं जानते, उन्होंने वास्तव में शास्त्र पढ़ा ही नहीं। ज्ञानस्वभावी आत्मा राग से भी भिन्न है - ऐसा बतलाकर शास्त्र ज्ञानस्वभाव का ही अवलम्बन कराते हैं और राग का अवलम्बन छुड़ातें हैं - यही शास्त्र का तात्पर्य है, यही शास्त्र पढ़ने का गुण है। जिसके भिन्नवस्तुभूत शुद्धज्ञानस्वभावी आत्मा के ज्ञान का अभाव है, उसको शास्त्र के पठन के फल का भी अभाव है अर्थात् वह अज्ञानी है; अत: राग से पार शुद्ध ज्ञानमय आत्मा का स्वरूप जानकर उसका आश्रय करना योग्य है।

प्रश्न : क्या शास्त्रों का अर्थ भी अनेक तरह से किया जाता है ?

उत्तर : अक्षरार्थ, भावार्थ आदि पाँच प्रकार से शास्त्रों का अर्थ करने को आचार्यदेव ने कहा है।

जैसे - ज्ञानावरणी कर्म से ज्ञान रुकता है - यह तो अक्षरार्थ हुआ। ज्ञानावरणी कर्म से ज्ञान नहीं रुकता, परन्तु अपने ही कारण ज्ञान अल्प (हीन) हुआ है - यह भावार्थ हुआ। पर के कारण ज्ञान अल्प हुआ है - ऐसा माननेवाले की तो दृष्टि ही मिथ्या है। परन्तु ज्ञान अपने ही कारण हीन है - ऐसा जानना सत्य है। ऐसा जानकर भी हीन पर्याय का लक्ष छोड़कर त्रिकालीध्रुव चैतन्यसामान्य का लक्ष करना भावार्थ है। यही जानने का प्रयोजन है।

नियमसार में आत्मा को चार भावों से अगोचर कहा है अर्थात् क्षायिकभाव से आत्मा जानने में नहीं आता - यह अक्षरार्थ है। यह अक्षरार्थ भी भावार्थ से ही सफल है। इसका भावार्थ यह है कि क्षायिक भाव के आश्रय से आत्मा ज्ञात नहीं होता, इसलिये आश्रय की अपेक्षा से क्षायिकभाव से अगोचर कहा है। आत्मा को जाननेवाली तो निर्मल पर्याय ही है, तथापि उसके आश्रय से त्रिकाली आत्मा जानने में नहीं आता।

नियमसार (भक्ति अधिकार) में दर्शन-ज्ञान-चारित्र के परिणाम का भजन वह भक्ति है - ऐसा कहा है, वह व्यवहार नय से कहा है; परन्तु उसका भावार्थ धर्मी जीव ध्रुव आत्मा की ही भक्ति-सेवा-उपासना करता है - ऐसा समझना। समयसार की 16 वीं गाथा में कहा है कि दर्शन-ज्ञान-चारित्र सदा सेवन करने योग्य है। वह व्यवहार से समझाया है, परमार्थ में तो एकरूप ध्रुव आत्मा का ही सेवन करना है। व्यवहार से समझाया जाता है, तथापि समझने और समझानेवाले को व्यवहार में स्थित नहीं रहना है। समयसार की 8 वीं गाथा की टीका में भी ऐसा ही कहा है कि ... व्यवहारनय भी म्लेच्छ भाषा के स्थान में होने के कारण परमार्थ का प्रतिपादक (कहनेवाला) होने से स्थापन करने योग्य है; तथापि ब्राह्मण को म्लेच्छ नहीं होना - इस वचन से वह (व्यवहारनय) अनुसरण करने योग्य नहीं है। जहाँ-जहाँ शुद्ध पर्याय की सेवा करने को -ध्यान करने को कहा है, वहाँ-वहाँ उसे समझाने की एकप्रकार की शैली के कथन समझना चाहिये। निर्मल पर्याय प्रकट होती है - इस अपेक्षा से कहा है - ऐसा समझना।

समयसार की 6 वीं गाथा की टीका में कहा है कि आत्मा अन्य द्रव्य-भावों से भिन्नरूप उपासना किये जाने से शुद्ध कहलाता है; वहाँ ऐसा समझना चाहिये कि अन्यद्रव्य से लक्ष छूटता है और स्वद्रव्य पर लक्ष जाता है, तब पर्याय भी गौण हो जाती है और अकेले ध्रुव द्रव्यस्वभाव पर लक्ष जाता है - यही द्रव्य की सेवा कही जाती है।

प्रश्न : जिनवाणी सुनने से ज्ञान होता है और पुण्यबन्ध होता है, उससे पैसा भी मिलता है-यह तो दोनों प्रकार से लाभ हुआ?

उत्तर : सुनने के राग से ज्ञान नहीं होता, केवल पुण्य ही होता है।

प्रश्न : सुनने सें थोड़ी-थोड़ी जानकारी तो होती है न?

उत्तर : यह जानकारी वास्तव में जानकरी नहीं,यथार्थ में वास्तविक जानकारी तो स्वसन्मुख हो, तब ही कही जाती है।

प्रश्न : ज्ञान में धारणारूप जानकारी तो होती है?

उत्तर : धारणारूप जानकारी होती है, लेकिन यथार्थ जानकारी तो सीधा स्वसन्मुख अन्तर आ जाए, तब होती है। भगवान आत्मा को राग से लाभ मानना तो कलंक है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा व विधि-विधान प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 7 से 11 मार्च, 2009 तक पंच दिवसीय विशिष्ट शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित विद्वत् समुदाय को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में निष्णात करने हेतु तीनों समय कक्षाओं का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर संहितासूरि पण्डित नाथूलालजी इन्दौर के शिष्य प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशचन्दजी बांझल इन्दौर एवं प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा संबंधित विषयों पर मार्मिक कक्षायें ली गई। साथ ही पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के भी मार्मिक सुझावों का लाभ मिला।

शिविर के माध्यम से पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में दिनों-दिन बढती जा रही विकृति को किस तरह से आगमानुकूल ढंग से दूर किया जा सके - इस संदर्भ में विशेष चर्चाएं हुई। विशेष बात यह रही कि प्रशिक्षक विद्वानों द्वारा किसी भी व्यक्ति, क्षेत्र, संस्था की आलोचना किये बिना बहुत ही सरल भाषा में आगमसम्मत निर्दोष आम्नायानुसार प्रतिष्ठा हेतु तर्क संगत प्रशिक्षण दिया गया।

निश्चित ही ऐसे प्रशिक्षणों के माध्यम से समाज को श्रेष्ठ विधानाचार्य एवं प्रतिष्ठाचार्य उपलब्ध हो सकेंगे।

इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकचन्दजी भारिल्ल ने श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों हेतु एक त्रिवर्षीय विधि-विधान पाठ्यक्रम तैयार करने की घोषणा की। जिसमें प्रथम वर्ष प्रतिष्ठा विशारद, द्वितीय वर्ष प्रतिष्ठा शास्त्री एवं तृतीय वर्ष प्रतिष्ठा आचार्य की उपाधि प्रदान की जायेगी ।

सभी प्रवेशार्थियों को विधि संबंधी जानकारी के अतिरिक्त प्रायोगिक प्रशिक्षण हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में ले जाया जायेगा।

शिविर के मध्य तीनों समय कक्षाओं के अतिरिक्त **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के **ध्यान का स्वरूप** विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। जिसके माध्यम से ध्यान के स्वरूप के बारे में चल रही विविध भ्रांतियों का आगम के आलोक में तर्क संगत समाधान किया गया।

ध्यान विषय पर हुये उनके व्याख्यानों की सी.डी उपलब्ध है। ●

ब्र. यशपालजी जैन द्वारा धर्म प्रभावना

मंगलायतन (उ.प्र.) : यहाँ दिनांक २५ फरवरी से १२ मार्च २००९ तक मंगलायतन के कक्षा ९ से १२ वीं के विद्यार्थियों, स्थानीय अनेक जिज्ञासु श्रावकों व अष्टाह्निका पर्व में आये साधर्मियों ने ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर के करणानुयोग विषय का लाभ प्राप्त किया। आपके द्वारा प्रात: **गुणस्थान समझने के लिए आवश्यक प्रश्नोत्तर विभाग** और सायं **गुणस्थान** विषय पर कक्षायें ली गई। विद्यार्थियों की परीक्षा का समय होते हुये भी उन्होंने अति उत्साह से विषय को ग्रहण किया।

ह्न **अशोक लुहाडिया**

सम्मेदशिखर में एक साथ आठ शिलान्यास

सम्मेदशिखर – यहाँ शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी की तलहटी में तेरहपंथी कोठी के पीछे दिनांक 23 से 27 फरवरी तक अन्तर्राष्ट्रीय दि. जैन मुमुक्षु महासंघ के तत्त्वाधान में श्री कुन्दकुन्द कहान दिग.जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा 20 तीर्थंकर विधान व 8 भव्य शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुये।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रतिदिन सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के समयसार की गाथा 39 से 44 पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला साथ ही गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन में समागत विषयवस्तु को डॉ. भारिल्ल ने जिसप्रकार खोला, उससे सारी समाज, विशेषकर अनन्तभाई बहुत प्रभावित हुये। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, बाल ब्र.अभिनंदनकुमारजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड आदि विद्वानों के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

शिलान्यास विधि ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित कान्तिलालजी इन्दौर, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल आदि ने सम्पन्न कराई ।

महोत्सव में श्री पार्श्वनाथ मन्दिर का शिलान्यास श्री अनंतभाई ए.सेठ परिवार, मानस्तम्भ का शिलान्यास श्रीमती वीणावेन जे. मोदी परिवार मुम्बई, स्वाध्याय भवन का शिलान्यास श्री अजितभाई जैन परिवार बड़ौदा की ओर से उनके श्वसुर श्री आदिनाथ नखाते, सरस्वती भवन का शिलान्यास श्रीमती संगीताबेन भारतीबेन आर. कोठारी मुम्बई, आरोग्य भवन का शिलान्यास श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली, विद्वत-निवास संकुल का शिलान्यास श्री दिलीपभाई वेलजीभाई शाह जयपुर, विश्रान्तिगृह का शिलान्यास श्री नेमीचन्दजी पाण्ड्या कोलकाता एवं कार्यालय का शिलान्यास श्री भभूतमलजी भण्डारी बैंगलोर के करकमलों से किया गया।

ज्ञातव्य है कि इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल की ध्यान का स्वरूप नामक नवीनतम कृति का वितरण किया गया तथा शिखरजी से लौटते समय कोलकाता में भी ध्यान विषय पर आपके एक व्याख्यान का लाभ मिला। ●

(पृष्ठ २२ का शेष...)

ज्ञान काल के प्रमाण को निश्चित करता है, उस प्रमाण करने वाले ज्ञान का समय एक है, किन्तु उस प्रमाण ज्ञान से आत्मा प्रमाण होता है। ऐसा निश्चित होते ही इस पर्याय का पर से भेद होकर स्व से एकत्व होना धर्म है।

अनंत गुण का अखण्ड पिण्ड आत्मा है। ऐसा एक समय की पर्याय में निर्णय हुआ तो पर्याय आत्मा जितनी दिखाई देती है। वह आत्मा के आधार से हुई ह्न ऐसा निश्चित होते ही निमित्त अथवा राग से पर्याय होती है, यह बात समाप्त हो जाती है। इसलिये एक समय की पर्याय पर्यायवान द्रव्य की है ह्न ऐसा निश्चित करना चाहिए। **(क्रमश:)**

श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय में शास्त्री अंतिमवर्ष के छात्रों का ह्न

विदाई एवं दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 18 फरवरी, 09 को श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों को भावभीनी विदाई दी गई।

इस प्रसंग पर त्रिमूर्ति जिनमंदिर में प्रात: सम्मेद शिखर विधान का आयोजन किया गया।

सभा की प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री, पण्डित अमितजी शास्त्री, श्री दिलीपभाई शाह आदि महानुभावों ने छात्रों के हितार्थ मार्मिक उद्बोधन दिये। इस अवसर पर संस्कृत के विशिष्ट अध्यापक श्रीराजधरजी मिश्र एवं डॉ. सतीश कपूरजी ने विद्यार्थियों को लौकिक एवं पारलौकिक शैली से जीवन जीने की प्रेरणायें दी।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल ने विद्यार्थियों द्वारा पाँच वर्षों में की पढाई को अन्य लौकिक पढाई की तुलना में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया।

समारोह में शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों में अजय जैन पीसांगन, अनुराग जैन, अंकित जैन, भरत कोरी, महेन्द्र मिरकुटे, तपिश जैन, संदीप जैन, संदीप चौगले, रविन्द्र मसलकर, नीतेश जैन, दीपक मंजलेकर, सुधीर जैन, शशांक जैन एवं स्वाति जैन ने महाविद्यालय में व्यतीत किये हुए पाँच वर्षों के अनुभवों, अनुजों को मार्गदर्शन एवं अपनी आगामी योजनाओं के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए महाविद्यालय परिवार एवं गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। सभी ने तत्त्वप्रचार-प्रसार हेतु सदैव सहयोग देने की उत्कृष्ट भावना को अभिव्यक्त किया।

आयोजन के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की, उन्होंने अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिये विशेषरूप से तैयार किये गये स्मृति-चिन्ह का अनावरण किया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के करकमलों से शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों को '**सिद्धान्तशास्त्री**' की उपाधि प्रदान की गई।

कार्यक्रम के अन्त में महाविद्यालय के विशिष्ट क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करनेवाले विद्यार्थियों में **आदर्श छात्र** के रूप में शास्त्री अंतिम वर्ष से तपिश जैन उदयपुर, **अध्ययन क्षेत्र** में शास्त्री तृतीय वर्ष से अजय जैन पीसांगन, **चिकित्सकीय योगदान** के लिये शास्त्री अंतिम वर्ष से महेन्द्र मिरकुटे आसेगांव को पुरस्कृत किया गया।

वर्ष 2008-09 की **सर्वश्रेष्ठ कक्षा** के रूप में शास्त्री प्रथम वर्ष को चल वैजयंती प्रदानकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन शास्त्री द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने किया।

बेस्ट सोलापुरकर आफ द इयर

महाराष्ट्र की ख्याति प्राप्त शिक्षा संस्था श्री ऐल्लक पन्नालाल दिगम्बर जैन पाठशाला, सोलापूर के विश्वस्त एवं सचिव **मा. रणजीत गाँधीजी** को दैनिक सकाल सोलापूर (दैनिक अखबार) द्वारा आयोजित वर्ष-2008 के '**बेस्ट सोलापुरकर आफ द इयर**' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। शिक्षण यही धर्म इस व्रत का पालन करनेवाली यह संस्था आज लगभग 125 साल पूरे कर रही हैं। इस संस्था के अंतर्गत पूर्व प्राथमिक से लेकर स्नातकोत्तर तक लगभग सभी शाखाओं के विभाग कार्यरत हैं।

संस्था के भूतपूर्व सचिव स्व. भाउसाहेब गांधीजी के सुपुत्र श्रीमान डॉ. रणजीत गांधी सुचारू एवं व्यवस्थित ढंग से चला रहे हैं।

वीतराग-विज्ञान (मासिक) की ओर से आपको हार्दिक शुभकामनायें ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

शोक समाचार

1. **नाई की मंडी आगरा निवासी श्रीमती शरबती देवी जैन** ध. प. श्री शिखरचंदजी जैन का दिनांक 6 फरवरी, 09 को शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप धार्मिक विचारोंवाली महिला थीं।आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक को 501/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

2. **जयपुर निवासी पण्डित श्री संतोषकुमारजी झांझरी** का दिनांक 24 फरवरी को 79 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से समाधिपूर्वक देहविलय हो गया है। आप चारों अनुयोगों के ज्ञाता विशिष्ट विद्वान थे। श्री दिगम्बर जैन तेरहपंथी बड़ा मंदिर, जौहरी बाजार (टोडरमलजी का मंदिर) में लगभग 40 वर्षों तक प्रतिदिन आपके प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। आपके चिर वियोग से स्थानीय जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। आपकी स्मृति में 500/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

5 अप्रैल	ध्रुवधाम बांसवाड़ा	दीक्षान्त समारोह
10 से 11 अप्रैल	बेगूँ (चित्तौडगढ)	जिनमंदिर शिलान्यास
23 से 29 अप्रैल	हस्तिनापुर	पंचकल्याणक
30 अप्रैल, 09	इन्दौर	इन्द्रध्वज विधान
1 से 5 मई, 09	जयपुर	विधान (बड़जात्या परिवार)
9 से 13 मई, 09	राजकोट	पंचकल्याणक
14 मई से 25 मई, 09	कोलारस	प्रशिक्षण शिविर
29 मई से 22 जुलाई	यूरोप व अमेरिका	धर्म प्रचारार्थ यात्रा

विधान एवं शिलान्यास समारोह सम्पन्न

द्रोणगिर (म.प्र.) : यहाँ सिद्धायतन में सोमवार, दिनांक 9 फरवरी, 2009 को श्री 1008 महावीरस्वामी दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रथम वार्षिकोत्सव के अवसर पर महामस्तकाभिषेक, पंचकल्याणक विधान एवं सिद्धायतन के मुख्यद्वार व बाउड्रीवाल का शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया।

इस प्रसंग पर श्री ऋषभकुमार जी (कर्रापुर) सागर ने ध्वजारोहण किया। शिलान्यास श्री अनंतभाई ए.सेठ मुम्बई के करकमलों से किया गया। विधानकर्त्ता श्री मस्तांई प्रेमचन्द प्रमोदकुमार परिवार घुवारा थे।

इस अवसर पर मुख्यअतिथि के रूप में सेठ गुलाबचन्दजी जैन सागर, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मुकेशजी जैन एवं श्री राजेन्द्रजी सेठी इन्दौर उपस्थित थे।

इस प्रसंग पर पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा सिद्धायतन, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित अरूणजी शास्त्री बड़ामलहरा आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

ह्न मुन्नालाल जैन बड़ामलहरा

विद्वत्सम्मान

सोनागिरि में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर इसी दिन सायंकाल श्री अन्तर्राष्ट्रीय दिगम्बर जैन मुमुक्षु महासंघ द्वारा 92 वर्षीय **'कविवर राजमलजी पवैया भोपाल'** का सम्मान समारोह भी आयोजित किया गया। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पवैयाजी पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का विशेष प्रभाव रहा। आपने हजारों आध्यात्मिक भजन, सैंकड़ों पूजायें एवं शताधिक विधानों की रचना करके एक नया कीर्तिमान रचा है।

इसी अवसर पर आपके सम्मान में मुमुक्षु महासंघ द्वारा 'अध्यात्म काव्य जगत का चमकता सूरज कविवर राजमलजी पवैया' नामक अभिनन्दन स्मारिका का विमोचन किया गया। सम्मान के रूप में आपको प्रशस्ति, शॉल, श्रीफल एवं नगद राशि से पुरस्कृत किया गया। तदुपरान्त देश की अन्य प्रमुख संस्थाओं एवं उपस्थित गणमान्य महानुभावों ने भी उनका अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री मुकेश जैन 'तन्मय' ने किया।

श्री पवैयाजी को वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनायें !

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

तीन-तीन परमागम कण्ठस्थ

जयपुर : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के अनेक विद्यार्थियों ने इस वर्ष आचार्य कुन्दकुन्द के परमागमों को याद करने का संकल्प किया, उनमें से तीन विद्यार्थियों ने तीन-तीन परमागमों को कण्ठस्थ करके दिनांक 19 फरवरी को मंच पर प्रस्तुत किया।

शास्त्री अंतिम वर्ष से अजयकुमार जैन एवं शास्त्री द्वितीय वर्ष से सजल जैन ने समयसार, प्रवचनसार और नियमसार नामक ग्रंथ याद किए व सुनाए तथा शास्त्री प्रथम वर्ष से राहुल जैन ने समयसार, नियमसार और पंचास्तिकाय संग्रह नामक ग्रंथ सुनाए।

अनेक विद्यार्थियों में इसप्रकार ग्रन्थ याद करने का उत्साह है। स्मारक परिवार ने प्रत्येक विद्यार्थी को 11000/- की राशि से प्रोत्साहित किया है।

वीतराग-विज्ञान एवं महाविद्यालय परिवार इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान सम्पन्न

केलवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर प्रांगण में दिनांक 25 व 26 फरवरी, 09 को वेदी प्रतिष्ठा की छठवीं वर्षगाँठ के अवसर पर श्री पद्मचंदजी गुलाबचंदजी दोशी परिवार, पीसांगन की ओर से एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा के मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ के आधार से हुये प्रवचनों के साथ ही अभिषेकजी शास्त्री द्वारा नवीन बंध विचार व चार अभाव विषयों पर ली गई कक्षाओं का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा के निर्देशन में श्री चंपालालजी निवाई, श्री अभिषेकजी शास्त्री व सम्पूर्ण जैनसमाज के सहयोग से सम्पन्न किये गये।

नये युग की आध्यात्मिक क्रान्ति का उदय

आपको बताते हुये हर्ष है कि श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री गौरवजी शास्त्री एवं श्री सौरभजी शास्त्री इन्दौर द्वारा **टेली कॉन्फ्रेंसिंग** के माध्यम से अमेरिका, कनाड़ा आदि देशों में धार्मिक कक्षायें संचालित की जा रही हैं।

इसी क्रम में इस बार 31 जनवरी, 09 से तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल कृत बालबोध पाठमाला से तत्त्वज्ञान पाठमाला तक के प्रमुख विषयों को रोचक शैली में समझाया जा रहा है।

इसमें नूतन प्रयोग के तौर पर उक्त विषयों को अंग्रेजी भाषा में भी संचालित किया जा रहा है, जिससे वहाँ के यंग तथा प्रोफेशनल लाभान्वित हो रहे हैं तथा हिन्दी भाषा से अनभिज्ञ जन भी जैनदर्शन के आत्मरहस्य को समझ रहे हैं।

अध्ययन सामग्री की प्राप्ति तथा अधिक जानकारी के लिये आप **www.jainism.us** पर लॉग इन कर सकते हैं। इस साइट पर प्रत्येक कक्षा की ऑडियो रिकार्डिंग भी उपलब्ध है।

सम्पर्क ह्न 09329796325

43 वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर कोलारस में

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की प्रेरणा से निर्मित पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित तियालीसवाँ श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 13 मई से 29 मई, 2009 तक कोलारस (म.प्र.) में होना निश्चित हुआ है। शिविर के माध्यम से अध्ययन करानेवाले बन्धुओं (अध्यापकों) एवं मुमुक्षु भाई-बहिनों को शिक्षण-विधि में प्रशिक्षित किया जायेगा।

इस अवसर पर आपको डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. अभिनन्दनजी खनियांधाना, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों/कक्षाओं का लाभ मिलेगा।

प्रशिक्षण शिविर में पहुँचने वाले भाई-बहनों को इसकी पूर्व सूचना निम्नांकित पते पर अवश्य भेज देवें, ताकि उनके ठहरने एवं भोजनादि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट,
ए-4, बापूनगर, जयपुर ह्न 15 (राज.)
फोन नं. (0141) 2705581/2707458

ह्न कोलारस का पता
श्री देवेन्द्रकुमार जैन, होटल फूलराज कम्पाउण्ड,
कोलारस, जिला-शिवपुरी (म.प्र)

नोट – कोलारस झांसी से 110 कि.मी.वाया शिवपुरी, ग्वालियर से 120 कि.मी. तथा गुना से 40 कि.मी. की दूरी पर है। तीनों स्थानों से कोलारस के लिये बसें चलती ही रहती हैं।

वीतराग-विज्ञान के स्वामित्व का विवरण (फार्म 4 नियम नं. 8)

समाचार पत्र का नाम	:	वीतराग-विज्ञान (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
प्रकाशक एवं मुद्रक	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक का नाम	:	डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 26-3-2009

ह्न प्रकाशक : **ब्र. यशपाल जैन**
ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर